ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र जुलाई 2018 (प्रथम)

मारीशस पहुंचा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निमन्त्रण पत्र

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली की तैयारी के चलते मारीशस पहुंचे हरियाणा सभा के यशश्री (प्रधान) मास्टर रामपाल जी एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी का स्वागत करते आर्य सभा मारीशस के प्रमुख अधिकारीगण ...

यहाँ पहुँचने पर मास्टर रामपाल जी द्वारा मारीशस के राष्ट्रपति महामहिम श्री Paramasivum Pillay Vyapoory को महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट किया गया तथा महाम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति के रूप में निमंत्रण पत्र भेंट किया..इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, आर्य सभा मारीशस (प्रधान) श्री Harrydev Ramdhony जी, प्रोफ़ेसर Sudarsun Jugessur जी Dr Roodrasen Neewoor, जी एवं आदि महानुभाव उपस्थित रहे....

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

आर्य सभा मॉरिशस के पदाधिकारियों को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण देते हुए सभा प्रधान व दिल्ली सभा प्रधान।

मॉरिशस में डी.ए.वी. महाविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण देते हुए सभा प्रधान व दिल्ली सभा प्रधान।

मॉरिशस में सेवा आश्रम में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण देते हुए सभा प्रधान व दिल्ली सभा प्रधान।

मॉरिशस में आर्य समाज मन्दिर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण देते हुए सभा प्रधान व दिल्ली सभा प्रधान।

मॉरिशस में आर्य समाज मन्दिर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण देते हुए दिल्ली सभा प्रधान।

मॉरिशस में आर्य समाज मन्दिर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण देते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

मॉरिशस में आर्य समाज मन्दिर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण देते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

मॉरिशस में आर्य समाज मन्दिर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निमंत्रण देते हुए सभा प्रधान व दिल्ली सभा प्रधान व उपस्थित आर्यजन।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 14 अंक 11

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जुलाई, 2018 (प्रथम)
1 से 15 जुलाई, 2018 तक

इस अंक में....

1.	जिज्ञासा-विमर्श (वेद)	2
2.	माता निर्माता भवति	4
3.	मन, बुद्धि व इन्द्रियों की अस्थिरता का परिणाम	6
4.	इस उन्नति के जमाने में सभी कुछ हो रहा है कि आदमी इंसान नहीं होता	8
5.	कर्मफल व्यवस्था में कुछ मान्य भ्रान्तियों का शंका-समाधान	10
6.	योग	12
7.	पंजाब में आर्यसमाज	13
8.	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली	14
9.	समाचार-प्रभाग	15

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

जिज्ञासा-विमर्श (वेद)

❑ आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

गतांक से आगे....

पहले हम यहाँ महर्षि के दोनों स्थलों को दे रहे हैं–

नहि ग्रभायारणः सुशेवोऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ।
अधा चिदोकः पुनरित्स एत्या नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः॥
(ऋ० 7.4.8)

पदार्थ–हे मनुष्य! जो (अरणः) रमण न करता हुआ (सुशेवः) सुन्दर सुख से युक्त (अन्योदर्य्यः) दूसरे के उदर से उत्पन्न हुआ हो (सः) वह (मनसा) अन्तःकरण से (ग्रभाय) के ग्रहण के लिए (नहि) नहीं (मन्तवै) मानने और योग्य है (चित्, उ, पुनः इत्) फिर भी वह (ओकः) घर को नहीं (एति) प्राप्त होता है (अध) उसके अनन्तर जो (नव्यः) नवीन (अभीषाड्) अच्छा सहनशील (वाजी) विज्ञान वाला (नः) हमको (आ, एतु) प्राप्त हो।

भावार्थ–हे मनुष्यो! अन्य गोत्र में अन्य पुरुष से उत्पन्न हुए बालक को पुत्र करने के लिए नहीं ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि वह हर घर आदि का दायभागी नहीं हो सकता, किन्तु जो अपने शरीर से उत्पन्न वा अपने गोत्र से लिया हुआ हो वही पुत्र व पुत्र का प्रतिनिधि होवे।

दूसरा स्थल सत्यार्थप्रकाश से है–''**प्रश्न**-जो किसी के एक ही पुत्र वा पुत्री हो, वह दूसरे वर्ण में प्रविष्ट हो जाये तो उसके माँ-बाप की सेवा कौन करेगा और वंशच्छेदन भी हो जायेगा, इसकी क्या व्यवस्था होनी चाहिए? **उत्तर**-न किसी की सेवा का भंग और न वंशच्छेदन होगा, क्योंकि उनको अपने लड़के-लड़कियों के बदले स्ववर्ण के योग्य दूसरे सन्तान, विद्यासभा और राज्यसभा की व्यवस्था से मिलेंगे, इसलिए कुछ भी अव्यवस्था नहीं होगी।'' सात्यार्थप्रकाश समुल्लास 4। इन दोनों स्थलों में विरोध दिख रहा है, यथार्थ में कोई विरोध नहीं है। वेद ऊँची स्थिति को कह रहा है और ऋषि आपत् स्थिति में एक अन्य विकल्प दे रहे हैं कि वेद के अनुसार यदि स्वगोत्र की सन्तान न मिल रही हो तो स्ववर्ण के गुण कर्म वाली सन्तान को अपना लें।

इस विषय में व अन्य प्रश्नों के उत्तर में आर्यसमाज के योग्य विद्वान् आचार्य आनन्द प्रकाश जी (अलियाबाद, तेलंगाना) ने जो विचार हमें लिखकर दिये हैं वे हमें उचित लग रहे हैं, उनको यहाँ आपके समाधान हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं–

(1) सबसे अच्छा तो वह है कि जो अपने वर्ण के गुण कर्मों से युक्त भी हो और आत्मज भी हो, अर्थात् अपने से उत्पन्न भी हो, क्योंकि बन्धु-बांधवों में उससे किसी का विरोध नहीं होता, अर्थात् सबको वह स्वीकार्य होता है।

(2) यदि अपना पुत्र न हो, तो जो अपने गोत्र का अपने वर्ण के गुण कर्म से युक्त हो, उसे अपना सकते हैं।

(3) तीसरी स्थिति यह है कि यदि अपना या अपने गोत्र में भी स्ववर्ण के योग्य न हो तो अपने गोत्र से भिन्न दूसरे की सन्तान अपने गुण कर्म से युक्त होने पर उसे अपना लेवें।'' यह आपत् स्थिति है, श्रेष्ठ स्थिति तो पूर्व-पूर्व वाली है। यह इसलिए कि जो प्रश्न उठाया था–''जो किसी के एक ही पुत्र.....सेवा कौन करेगा और वंशच्छेदन भी हो जाएगा....।'' इस स्थिति के लिए महर्षि ने यह व्यवस्था रखी है। इस प्रकार से यदि दोनों स्थलों को देखेंगे तो जो विरोध दिख रहा है वह विरोध नहीं दिखेगा। फिर भी इस विषय में कोई इससे अच्छा समाधान करना चाहे तो उसका स्वागत है।

जिज्ञासा 8. परमात्मा ने सृष्टि के आदि में वेदज्ञान चार ऋषियों को ही क्यों दिया? सिर्फ एक या दो या तीन को देते तो नहीं चल सकता था क्या? केवल एक ही ऋषि के हृदय में चारों वेद नहीं समा सकते थे क्या? आप मेरी शंका का समाधान करने की कृपा करें।

–रणवीर आर्य, म०नं० 11-66/485, अर्बन कॉलोनी, भोंगीर, नलगोण्डा, तेलंगाना-508116

समाधान–समूचे संस्कृत साहित्य में वेद का गरिमामय स्थान है। ऋषियों ने वेद को ही सर्वोच्च प्रमाण माना है, क्योंकि वेद साक्षात् परमेश्वर का ज्ञान है। इस आर्यावर्त्त देश में प्राचीन काल से धर्माधर्म का निर्णय वेद के आधार पर ही होता रहा है। महर्षि मनु उद्घोषणा करते हैं कि एक ओर वेदज्ञ अकेला हो और दूसरी ओर अवेदज्ञ हजारों, करोड़ों भी क्यों न हों, धर्मनिर्णय में वेदज्ञ ही प्रमाण है, वेदज्ञ की ही बात मान्य है–

एकोऽपि वेदविद्धर्मं यं व्यवस्येद् द्विजोत्तमः।
स विज्ञेयः परो धर्मो नाज्ञानामुदितोऽयुतैः॥
(मनु० 12.113)

महर्षि मनु वेद के विषय में यह भी कहते हैं-

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति॥ (मनु० 12.97)

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र-ये चार वर्ण और इनकी व्यवस्था, पृथ्वी, आकाश एवं द्युलोक अर्थात् समस्त लोक, ग्रह आदि, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास-इन चारों आश्रमों के पृथक्-पृथक् विधान और भूत, भविष्य, वर्तमान-इन तीनों कालों की सत्य विद्या-ये सब वेदों से ही प्रसिद्ध, प्रकट और ज्ञात होती हैं, अर्थात् इन सब व्यवस्थाओं और विद्याओं का ज्ञान वेदों के द्वारा ही होता है।

महर्षि की मान्यता है कि वेद का ज्ञाता ही सेनाओं का संचालन कर सकता है, राज्य का संचालन कर सकता है, न्याय-व्यवस्था का संचालन कर सकता है और समस्त भूमण्डल के चक्रवर्ती राज्य तक का संचालन कर सकता है-

सैनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति॥ (मनु० 12.100)

ऐसा महर्षि मनु इसलिए मानते हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि में वेद सर्वज्ञानमय अर्थात् समस्त विद्याओं का भण्डार हैं। परम्परा स यद्यपि वेद और स्मृति-ये दोनों ही अपने-अपने स्थान पर प्रमाण हैं, फिर भी यदि दोनों की बातों में विरोध दिखता है तो वहाँ स्मृति को छोड़ वेद की बात मान्य है, क्योंकि वेद सर्वज्ञ परमेश्वर के द्वारा बनाये हुए हैं।

इस समस्त ज्ञान के भण्डार वेद के ज्ञान को आदि सृष्टि में परमात्मा ने चार ऋषियों को दिया। महर्षि अग्नि को ऋग्वेद का ज्ञान, महर्षि वायु को यजुर्वेद का ज्ञान, महर्षि आदित्य को सामवेद का ज्ञान व महर्षि अङ्गिरा को अथर्ववेद का ज्ञान दिया, क्योंकि ये ही उस समय की सबसे पवित्र आत्माएँ थीं।

इन चार ऋषियों को दिये ज्ञान को देखकर आपकी जिज्ञासा है कि यह ज्ञान दो ऋषियों, तीन या एक ही को क्यों नहीं दे दिया गया? इस पर हमारा कहना है कि ऐसा हो सकता था कि दो, तीन या एक ही ऋषि को परमात्मा वेद का ज्ञान दे देते, किन्तु ऐसा होने पर फिर कोई जिज्ञासा करता कि वेद तो चार हैं, इनका ज्ञान दो, तीन या एक ऋषि को ही क्यों दिया, चार को क्यों नहीं दिया? कितना अच्छा होता कि एक का लाभ न कर चार-चार का लाभ करता अथवा वेद के एक-एक मण्डल का ज्ञान, एक-एक काण्ड का अथवा एक-एक अध्याय का ज्ञान एक-एक अर्थात् भिन्न-भिन्न ऋषियों को क्यों नहीं दिया? यदि दे देता तो अधिकों को लाभ होता आदि अनेक जिज्ञासाएँ और कोई खड़ी कर सकता है। जैसी जिज्ञासा चार ऋषियों को ज्ञान देने पर बनी है, वैसी ही जिज्ञासा कोई दो, तीन अथवा एक ऋषि को ज्ञान देने पर भी कर सकता है।

इसलिए जैसी व्यवस्था परमात्मा की बनाई हुई है सो ठीक है, अर्थात् यह परमेश्वर की ही व्यवस्था है कि जब-जब परमेश्वर आदिसृष्टि में वेद का ज्ञान देगा, तब-तब चार ऋषियों को देगा। उससे आगे इन्हीं चार ऋषियों से वेद की परम्परा चलेगी।

परमेश्वर की इस व्यवस्था को न मानने पर 'अशोक वाटिका न्याय' जैसी स्थिति होगी, अर्थात् रावण ने माता सीता को अशोक वाटिका में रखा था, अब कोई कहे कि अशोक वाटिका में न रखकर महल में क्यों नहीं रखा? यदि महल में रखा होता तो कोई कह सकता है कि कहीं अन्यत्र क्यों नहीं रखा? इसलिए वेदों का ज्ञान देने के विषय में भी इसी प्रकार समझें।

जिज्ञासा-9.

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामिदेकामभ्यंहुरो गात्।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ॥
(अथर्व० 5.1.6)

ज्ञानी महात्माओं ने सात मर्यादाएँ बनाई हैं, यदि मनुष्य उनमें से एक का भी उल्लंघन करता है तो वह पापी हो जाता है।

प्रश्न है-वे सात मर्यादाएँ कौन-सी हैं, जिनसे मनुष्य पापी हो जाता है? दूसरा जनेऊ को कान पर चढ़ाने की परम्परा का वैदिक आधार क्या है? **-मध्यप्रदेश, ऊना**

समाधान-अथर्ववेद के मन्त्र में कही गई सात मर्यादाएँ लिखने से पहले मर्यादा शब्द के अर्थ को देख लेते हैं। मर्यादा का अर्थ है-सीमा, छोर, किनारा, हद आदि। परमेश्वर ने जब जड़-चेतन को मर्यादाओं में बांधा है। जो-जो भी अपनी मर्यादा में रहता है, वह-वह उन्नति करता है और जिसने मर्यादाओं का अतिक्रमण किया, उसने हानि को ही प्राप्त किया। परमेश्वर ने मनुष्य के लिए सात मर्यादाएँ कहीं हैं और उनका अतिक्रमण न करने का संकेत किया है। उन सात मर्यादाओं को महर्षि यास्क ने अपने ग्रन्थ निरुक्त में खोला है-

क्रमशः अगले अंक में....

माता निर्माता भवति

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

अथर्ववेद का मंत्र है-

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवान्॥

(अथर्व० 3.30.2)

हे गृहस्थियो! तुम्हारे घर में (पुत्रः पितुः अनुव्रतः) पुत्र पिता का अनुवर्ती, अनुकूल आचरण करने वाला हो, आज्ञाकारी हो और (मात्रा भवतु सम्मनाः) माता के समान मन वाला होवे, (जाया पत्ये मधुमतीं शान्तिवान् वाचं वदतु) पत्नी पति के लिए मधुमयी शान्ति देने वाली वाणी बोले।

मन्त्र के पूर्वार्द्ध के प्रथम चरण में तीन शब्द हैं, जो बड़े महत्त्व के हैं और जिनसे कई प्रश्नों का समाधान हो जाता है। (अनुव्रतः पितुः पुत्रो) यहाँ पर पिता का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने पुत्र या पुत्री का भलीभांति पालन-पोषण करे। इसको विद्या-सुशिक्षा से अलंकृत कर जगत् में अच्छा मानव बनाकर खड़ा करने का प्रयास करे। ऐसे ही यह जो पुत्र या पुत्री हैं, इसका यह कर्त्तव्य है कि वह अपने जनक पिता को देव समझकर इसका मान-सम्मान करे और इसके अनुकूल व्रतों का पालन करे, इसके अनुकूल आचरण करे। अर्थात् इसकी आज्ञाओं के अनुसार कार्य करे। ऐसा करने पर इस बालक का पिता प्रसन्न होगा और उसके हृदय से बच्चे के लिए आशीर्वाद निकलेगा।

मन्त्र के पूर्वार्द्ध के दूसरे चरण में तीन महत्त्वपूर्ण शब्द हैं (मात्रा भवतु सम्मनाः) अर्थात् यह पुत्र या पुत्री माता के समान मन वाला हो। यहाँ माता का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने इस पुत्र या पुत्री का भलीभांति लालन-पालन करे। इसको जीवन के प्रभात से ही लोरियों के द्वारा वा छोटी-छोटी कहानियों के द्वारा विद्या-सुशिक्षा एवं उत्तमोत्तम गुण, कर्म, स्वभावों से युक्त करती हुई जगत् में एक अच्छे मानव के रूप में खड़ा करने का हार्दिक प्रयास करे। ऐसे ही यह जो सन्तान है, इसे चाहिए कि वह अपनी इस जननी को देवी समझकर इसका सम्मान करे और इसके साथ समान मन वाला, एक मन वाला होकर सब कार्यों को करे। अर्थात् यह सदा यह सोचकर कार्य करे कि मेरे इस कार्य से माँ सुखी रहे। यह विचार करके जब यह कर्म करेगा तो फिर इसके द्वारा जो कर्म होगा, वह शुभ ही शुभ होगा और फिर उससे उसकी माँ की आत्मा सदा तृप्त रहेगी तथा हृदय से इसको आशीर्वाद देगी।

इस मन्त्र के उत्तरार्द्ध में वेद का उपदेश है, '**जाया पत्ये मधुमतीं शान्तिवान् वाचं वदतु**' पत्नी, पति के लिए माधुर्ययुक्त एवं शान्तिप्रिय मधुर वाणी बोले। ऐसे ही पति भी पत्नी के साथ मधुर एवं प्रेमयुक्त भाषण करे। इस प्रकार तात्पर्य यह है कि दोनों का परस्पर व्यवहार बड़ा ही मधुर, प्रेममय और शान्तिपूर्ण ढंग से होना चाहिए, ताकि उनके इस माधुर्यपूर्ण व्यवहार का प्रभाव आने वाली सन्तान पर ऐसा अच्छा पड़े कि वह उन दोनों की आशाओं, आकांक्षाओं और विश्वासों से बढ़कर दिव्य बन सके, उत्तम बन सके।

इस मन्त्र के प्रथम चरण में जहाँ जनक के लिए 'पिता' तथा जननी के लिए 'माता' पद से स्मरण किया गया है और कहा गया है कि '**माता भवतु सम्मनाः**' पुत्र माँ के समान मन वाला हो। अब जैसे 'पिता' शब्द से यह भलीभांति बोध हो जाता है कि पिता का बालक के प्रति क्या कर्त्तव्य है। वैसे ही माता शब्द से ही यह ज्ञान होता है कि बालक के प्रति माता का क्या उत्तरदायित्व या कर्त्तव्य है। 'माता' का एक अर्थ (माङ् माने धातु से यह शब्द बनने से) यह होता है कि जो मानकर्मी हो-मान करने वाली हो। अब पूरा विश्व यह जानता है कि माता अपने बच्चे का कितना मान करती है, उसकी भावनाओं और इच्छाओं पर वह क्या-क्या न्यौछावर कर देती है।

माता का दूसरा बड़ा सुन्दर अर्थ होता है, '**माता निर्माता भवति**' अर्थात् माता ही सन्तान का जैसा निर्माण कर सकती है दूसरा और कोई नहीं कर सकता। ऋषिवर दयानन्द जी भी सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं, वह सन्तान भाग्यवान् है जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है अन्य किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए माता को चाहिए कि वह बालक को सुशीलता का उपदेश करे। माता बालक की निर्मात्री होती है। उसमें सदा यह उत्कृष्ट अभिलाषा रहती है कि वह बच्चे के निर्माण में सदा सजग रहे। वेद के शब्दों में वह हृदय की टीस के साथ प्रभु से प्रार्थना करती है कि-

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्

(ऋग्वेद 10.159.3)

अर्थात् मेरे पुत्र शत्रुओं का हनन करने वाले हों, मेरी पुत्री अद्वितीय तेज से युक्त हो। वह मात्र ऐसी प्रार्थना ही नहीं करेगी, वरन् जी-जान से ऐसा हार्दिक पुरुषार्थ भी करती है जिससे उसके पुत्र यदि ब्राह्मण बनें तो वे काम, क्रोध आदि भीतर के शत्रुओं का दमन करते हुए कपिल, कणाद, शंकर, दयानन्द, श्रद्धानन्द जैसे सच्चे योगी, तपस्वी, भक्त और वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले हों। यदि वे क्षत्रिय हों तो युद्ध में शत्रुओं के छक्के छुड़ा देने वाले हों, शत्रुओं के दांत खट्टे कर देने वाले एवं शत्रु पर पूर्णतया विजय प्राप्त करने वाले हों। यदि वे वैश्य बनें तो अपने अति लोभ पर विजय प्राप्त कर अत्यन्त पुरुषार्थ, अपनी तथा समाज की दैनिक आवश्यकताओं की आपूर्ति करने वाले हों और यदि वे सन्तान पढ़ाने से भी न पढ़ पायें तो तीनों वर्णों की उचित वृत्ति लेकर सेवा करें। यदि पुत्री उत्पन्न हो तो वह ऐसी होनी चाहिए जैसे कि दोपहर के समय का तेजस्वी सूर्य होता है अर्थात् उसको कोई आँख उठाकर भी न देख सके और यदि कोई प्रयास करे तो सिंहनी के समान उसका मान मर्दन करने वाली हो। इतना ही नहीं, वह माँ स्वयं तो ऐसा करती हुई कहती है-

उताहमास्मि सञ्जया, पत्यौ मे श्लोक उत्तमः

(ऋग्वेद 10.159.3)

मैं सम्यक् रूप से शत्रुओं की जीतने वाली होती हूँ। मेरे पति में भी उत्कृष्ट अंश होता है अर्थात् मेरे पति भी वीरता के कारण यशस्वी होते हैं। माता-पिता की वीरता के होने पर ही सन्तानों में भी वीरता आती है। माता-पिता का जीवन यशस्वी न हो, तो सन्तानों का जीवन कभी यशस्वी नहीं हो सकता। अर्थात् वीर माता-पिता ही वीर व यशस्वी सन्तानों को जन्म देते हैं। माता वेद के शब्दों में अपने कर्त्तव्यों को घोषित करते हुए कहती है-

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत्॥

(ऋग्वेद 10.159.2)

आदर्श माता कहती है कि (अहं केतुः) मैं ज्ञान वाली बनती हूँ। (अहं मूर्धा) मैं अपने क्षेत्र में शिखर पर पहुँचने का प्रयत्न करती हूँ। (अहं उग्रा) मैं तेजस्विन बनती हूँ अर्थात् मैं अपने मस्तिष्क में ज्ञान, मन में शिखर पर पहुँचने की भावना वाली तथा शरीर में तेजवाली, प्रभु के नाम को सदा जपने वाली आदर्श माता बनकर अपनी सन्तान का निर्माण करना चाहती हूँ। इसके अतिरिक्त वह माँ अपने पति से भी इसी प्रकार का आश्वासन चाहती है। (सेहानायाः) काम, क्रोध आदि शत्रुओं का पराभव करने वाली (मम) मेरे (क्रतुं अनु) संकल्प के अनुसार (इत) ही (पतिः) मेरे पति (उपाचरेत्) कार्यों को करने वाले हों। अर्थात् यदि माता तेजस्विनी व शान्त स्वभाव वाली हो, क्रोध आदि से सदा दूर रहने वाली हो और उसके अनुसार उसका पति उसका सहयोग करने वाला हो तभी सन्तान का उत्तम निर्माण हो सकता है।

सच्ची माता अपने इन्हीं उत्तम गुणों के कारण से माता कहलाती है, न कि केवल दाल, शाक, भात, रोटी बनाकर खिला-पिता देने आदि मात्र से, क्योंकि यह कार्य तो पशु भी कर लेते हैं। मुख्य रूप से तो सन्तान का जन्म एवं निर्माण ही माता का कार्य है। इतिहास में यही कार्य माता जीजाबाई ने शिवाजी को बनाने में किया, माता कौशल्या ने भी श्रीराम जी को बनाने में किया, यशोदा ने श्रीकृष्ण जी को बनाने में किया। इन्हीं विशेषताओं के कारण माता को शास्त्र ने 'देव' अर्थात् देवता की उपाधि दी है और पुत्र से कहा है कि **'मातृदेवो भव'** तू प्रभु कृपा से उस माता को देवता समझकर उसकी पूजा अर्थात् सम्मान कर और उसकी इच्छानुसार अच्छे चरित्र का स्वामी बन। महर्षि मनु जी ने (2/145) माता को उपाध्यायों, आचार्यों और यहाँ तक कि पिताओं से भी उत्कृष्ट स्थान पर खड़ा कर दिया। वे लिखते हैं-

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते॥

(दश उपाध्यायान् आचार्यः) दस उपाध्यायों की अपेक्षा आचार्य का (आचार्याणां शतं पिता) सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता का (तु) और (सहस्रं पितृन् तु माता) पिता से हजार गुणा माता (गौरवेण अतिरिच्यते) गौरव में अधिक है।

(यद्यपि डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने विशुद्ध मनुस्मृति में इस श्लोक को प्रसंग-विरोध और अन्तर्विरोध के कारण प्रक्षिप्त माना है, परन्तु माँ की महत्ता को दर्शाने में यह श्लोक महत्त्वपूर्ण है)।

वैदिक संस्कृति और सभ्यता में नारी को उच्च स्थान प्राप्त है, उसमें नारी के विभिन्न रूपों में उसकी महत्ता का वर्णन है, परन्तु नारी का माँ-रूप विशेष महत्त्व का है। वह समाज को एक योग्य सन्तति के रूप में अपना विशिष्ट योगदान प्रस्तुत करती है। ऐसी सन्तान एक सम्पुष्ट समाज के निर्माण में सहयोग करने वाली होती है। अतः यह कहना सत्य है-**माता निर्माता भवति।**

मन, बुद्धि व इन्द्रियों की अस्थिरता का परिणाम

❑ महात्मा चैतन्यमुनि

परमात्मा ने न्यायपूर्वक हमारे कर्मों के आधार पर हमें यह मानव शरीर प्रदान किया है। यदि हम गहराई से चिन्तन करें तो पता चलेगा कि यह उपलब्धि अपने आप में अद्भुत एवं अनुपम है। यह अलग बात है कि अधिकतर लोग गहराई से चिन्तन नहीं करते हैं और इस मानव चोले का महत्त्व न जानकर इसे यूं ही पशुओं की तरह मात्र सोने-जागने और खाने-पीने में ही व्यतीत कर देते हैं। जो चिन्तन करते हैं वे इस शरीर के माध्यम से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य कर जाते हैं। प्रभु ने हमें इस शरीर के माध्यम से पांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञानेन्द्रियां दी हैं। क्या कोई इनका मूल्य आंक सकता है? नहीं, कदापि नहीं, ये सब अनमोल हैं। केवल इतना ही नहीं दिया बल्कि इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण एवं अनुपम मन दिया है, उससे भी सूक्ष्म बुद्धि दी है, उससे भी सूक्ष्म चित्त दिया है। जो व्यक्ति इन उपकरणों का सही-सही प्रयोग कर लेता है, वह अपने इस जीवन को सफल बना लेता है और जो इनका सही-सही प्रयोग नहीं कर पाता वह इस अनमोल मानव जीवन को बर्बाद कर देता है। इन सबका प्रयोग हम तभी सही-सही ढंग से कर सकते हैं यदि हम सदा चित्तसाक्षी की स्थिति में अपने जीवन को जीने में सक्षम हों। अन्यथा हम इन उपकरणों का सही-सही प्रयोग न करके दुरुपयोग कर बैठेंगे और आगे यह शरीर पाने का अधिकार तो खो ही बैठेंगे मगर साथ ही इस जीवन में भी अनेक ही दुःख, कष्ट और क्लेश प्राप्त करेंगे। यदि हम साक्षी-भाव की स्थिति में नहीं रहेंगे तो ये उपकरण ही हमें अनेक दिशाओं में भटकाकर व्यथित करते रहेंगे। वेद में ऐसे व्यक्ति का चित्रण करते हुए बहुत ही सार्थक एवं सटीक चित्रण करते हुए कहा गया है- **वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वीदं ज्योतिर्हृदय आहितं यत्। वि मे मनश्चरति दूरआधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनि-ये।।** (ऋ. 6-9-6)

अपने स्वरूप को न पहचानकर अर्थात् अपनी कर्मेन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों और मन, हृदय, बुद्धि, चित्त आदि का साक्षी-भाव से नियन्त्रण करके इनका सदुपयोग न कर पाने वाला व्यक्ति कहता है कि (**मे कर्णा विपतयतः**) मेरे कान विविध शब्दों को सुनने के लिए इधर-उधर गतिवाले होते हैं। व्यक्ति अपने कानों का दुरुपयोग करता हुआ न जाने किस-किस प्रकार की अनर्गल और अशोभनीय बातें सुनता रहता है। आज तो दूरदर्शन आदि के माध्यम से बहुत ही गन्दगी हमारे भीतर जा रही हैं। यही नहीं हम असावधानी पूर्वक ऐसी बातों के श्रवण में सुख लेने लगते हैं जो हमारे भीतर कुसंस्कारों का अम्बार खड़ा कर रहा होता है। पतित व्यक्ति दूसरे की निन्दा, चुगली में बहुत मजे लेता रहता है मगर उसे पता नहीं कि परमात्मा की न्याय-व्यवस्था में उसे इसका कितना कठोर दण्ड भोगना पड़ेगा। वेद तो कहता है **'भद्रं कर्णेभि शृणुयाम्'** अर्थात् हम अपने कानों से किसी प्रकार भी अभद्र न सुनें बल्कि सदा भद्रता सुनने के लिए ही अपने कानों का उपयोग करें। (**मे चक्षुः**) मेरी आंखें इधर-उधर विविधरूपों को देखने के लिए जाती हैं। स्वयं पर नियन्त्रण न रखने वाला व्यक्ति अपनी आंखों से भी अभद्र ही देखता रहता है। दूरदर्शन आदि के द्वारा आज जो अभद्र परोसा जा रहा है वह वास्तव में ही नई पीढ़ी को पतन के गर्त में ले जा रहा है। यदि हमारी सरकारें इन पर रोक लगाएं तो समाज में होने वाले दुराचार बहुत सीमा तक समाप्त हो जाएंगे और यदि इन पर रोक न लगाई गई तो आगे और अधिक विकट स्थितियां आती चली जाएंगी। वेद तो हमें आंखों से भी **'भद्रम् पश्येमा'** भद्र ही देखने की अनुमति एवं प्रेरणा देता है। हम अपनी कर्मेंद्रियों और ज्ञानेन्द्रियों से सदा-सर्वदा भद्र ही करें, यही उनका सदुपयोग है।

आगे अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए ऐसा डावॉडोल अज्ञानी व्यक्ति कहता है (**हृदये आहितम् इदम् ज्योतिः**) मेरे हृदय में स्थित यह प्रकाश अर्थात् बुद्धि जो विवेक का साधन है, वह विविध प्रकार के चिन्तन में भटकती रहती है। बुद्धि का बल अनुपम एवं अद्भुत है मगर अस्थिरता पूर्वक जीवन जीने वाले व्यक्ति की बुद्धि उसे सुचिन्तन की ओर न ले जाकर कुचिन्तन की ओर ले जाती है और यह विपरीत बुद्धि ही उसके चतुर्दिक् पतन का कारण बनती है। कहा भी गया है कि **'विनाशकाले विपरीत बुद्धि'**। अस्थिरचित्त व्यक्ति कहता है कि (**मे मनः विचरति**) मेरा यह मन इधर-उधर भटकता रहता है। जिस प्रकार परमात्मा ने अनेक प्रकार के

प्रसाधन हमें अपना कार्य करने के लिए दिए हैं उसी प्रकार मन भी प्रभु द्वारा दिया गया एक अद्भुत साधन है। हमें मन की शक्ति को पहचानना चाहिए और इसका प्रयोग जीवन को उन्नति की ओर ले जाने के लिए करना चाहिए। मन यदि संकल्पशील है तो आप संसार की प्रत्येक वस्तु प्राप्त कर सकते हैं और यदि यह मन ही संकल्पित नहीं है तो आप जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इधर-उधर भटकने वाला मन कभी कुछ भी नहीं कर सकता है इसलिए अपने मन को संयमित करके इससे कार्य करना चाहिए। कहा भी गया है **'मन जीते जग जीत'** जिसने अपने मन को जीत लिया मानो उसने संसार को जीत लिया। वह अपने आप में ही शहंशाह बन जाता है। अन्यत्र कहा गया है **'मन के हारे हार है मन के जीते जीत**। कहते हैं कि महामना शंकराचार्य जी से जब किसी ने पूछा के संसार को कौन जीत सकता है तो उन्होंने उत्तर दिया कि संसार को वह व्यक्ति जीत सकता है जिसने अपने मन को जीत लिया हो। वेद में मन को शिवसंकल्पी बनाने की बहुत ही उत्तम प्रार्थनाएं की गई हैं। तदनुसार अपने मन की भावनाओं को बनाना चाहिए।

यदि प्रभु द्वारा प्रदत्त साधनों का सदुपयोग करेंगे तब तो लक्ष्य तक पंहुचना सुनिश्चित है मगर यदि इन साधनों का सदुपयोग नहीं किया तो इसी मन्त्र में डावांडोल स्थिति वाला व्यक्ति बड़ी ही बेचारगी के साथ कह रहा है कि (**किं स्विद वक्ष्यामी उ नु किं मनि-य**) प्रभु ऐसी डावांडोल स्थिति में मैं आपके स्तुति वचनों का कैसे उच्चारण करूं? कैसे आपका मनन और चिन्तन करूं? मन्त्र में जिस प्रकार से व्यक्ति अनुताप कर रहा है इसका यही भाव है कि वह यदि ऐसा न करे अर्थात् अपनी कर्मेन्द्रियों, ज्ञानेन्द्रियों, मन, बुद्धि एवं हृदय आदि को पवित्र, सक्रिय और संकल्पित बना ले तो वह इस प्रकार की डावांडोल स्थिति से बच जाएगा तथा भली प्रकार से प्रभु की स्तुति, प्रार्थना और उपासना आदि करके अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकेगा। स्तुति से प्रभु के प्रति प्रेम स्थापित होगा तथा अपने भीतर गुणों का सृजन होगा, प्रार्थना से आत्मविश्वास तथा कर्म करने की क्षमता प्राप्त होगी और उपासना से प्रभु के आनन्द का स्पर्श पाने में सफलता प्राप्त होगी।

संपर्क-महादेव, तहसील सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि०प्र०) 175018 मो० 09418053092

बाबाओं ने अच्छे संतों की भद्द करदी

इन तथाकथित बाबाओं ने, अच्छे संतों की भद्द कर दी।
ऐषणाओं में संलिप्त हो, सब मर्यादाओं की हद कर दी॥
इन तथाकथित बाबाओं ने.... ॥
एक समय था बाबा जी, सत्य उपदेश दिया करते।
वन-कंदराओं और घास-फूस की, कुटियों में रहा करते।
यम-नियम का पालन कर, संयम में जीया करते।
वाञ्छा तृष्णा सब तज करके, भक्ति में रत रहा करते।
संकट कष्ट सहा करते सब, चाहे गर्मी हो या सरदी।
इन तथाकथित बाबाओं ने.... ॥

मोह माया और ममता से, वे हरदम दूर रहा करते।
पापकर्म और पाखण्डों से, वे परहेज किया करते।
त्याग दिया सो त्याग दिया, नहीं पश्चात्ताप किया करते।
अवसर मिलने पर भी नहीं, कभी नियत से डिगा करते।
पर आज के बाबाओं ने झोली, पापकर्म से अपनी भर दी।
इन तथाकथित बाबाओं ने.... ॥
एक स्थान पर नहीं रहकर, भ्रमण वे सदा किया करते।
मठ और डेरे नहीं बनाकर, विचरण सदा किया करते।
फाकाकशी व रुग्ण होने पर, नहीं प्रण से हटा करते।
सब दुनियादारी लाग लपेट से, वे सदैव दूर रहा करते।
पाजीपन, दुष्टकर्मों से, बाबाओं ने इज्जत खाक कर दी।
इन तथाकथित बाबाओं ने.... ॥
अब तो बाबा बड़े-बड़े, भव्य भवनों में रहते हैं।
ढोंग और स्वांग रचाकर, खुद को ईश्वर कहते हैं।
गुरुडम और नाम चर्चा से, जनता की बुद्धि हरते हैं।
ऐय्याशी का जीवन जीते, नहीं वे ईश्वर से डरते हैं।
निकृष्टता, कामाग्नि संलिप्ता की, सब सीमा पार कर दी।
इन तथाकथित बाबाओं ने.... ॥
ऐशो-आराम का सामान जुटा, जीवन का आनन्द लेते हैं।
भूमिगत कुटियाओं में, स्त्रियों को माफी देते हैं।
दुराचार और पापकर्म की, सीमा लांघ देते हैं।
शरण में जो आ जाता है, उसको फांस लेते हैं।
नये-नये दुष्कर्म उजागर होते, फेहरिस्त लम्बी इन्होंने कर दी।
इन तथाकथित बाबाओं ने.... ॥
बाबा बनने से पहले इन्हें, वेदाध्ययन करना चाहिए।
यम-नियम अष्टांग निभाकर, आत्मचिन्तन करना चाहिए।
इच्छा-तृष्णा और पापाचार से सदा दूर रहना चाहिए।
पापों का दण्ड अवश्य मिलेगा, ईश्वर से डरना चाहिए।
ऋषि दयानन्द से तुम लो प्रेरणा, जिसने मानवताहित जान फना करदी।
इन तथाकथित बाबाओं ने.... ॥

–देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, 725, सै०-4, रेवाड़ी, मो० नं० 9416337609

इस उन्नति के जमाने में सभी कुछ हो रहा है कि आदमी इंसान नहीं होता

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहानामण्डी (सोनीपत)

वे ही मनुष्य, असुर, दैत्य, राक्षस तथा पिशाच आदि हैं, जो आत्मा में और जानते वाणी से और बोलते और करते

कुछ और ही हैं, वे कभी अविद्यारूप दु:खसागर से पार हो आनन्द को नहीं प्राप्त हो सकते और जो आत्मा, मन, वाणी और कर्म से निष्कपट एक-सा आचरण करते हैं वे ही देव आर्य सौभाग्यवान सब जगत् को पवित्र करते हुए इस लोक और परलोक में अतुल सुख भोगते हैं (यजु०)।

ब्रह्म के अनन्त होने से जहाँ-जहाँ मन जाता है, वहाँ-वहाँ प्रथम से ही स्थिर ब्रह्म वर्तमान है उसका विज्ञान शुद्ध मन से होता है। चक्षु आदि इन्द्रियों और अविद्वानों से देखने योग्य नहीं है। वह आप निश्चय हुआ सब जीवों को नियम में चलाता और धारण करता है। उसके अति सूक्ष्म इन्द्रियगम्य न होने के कारण धर्मात्मा विद्वान् योगी को ही उसका साक्षात् ज्ञान होता है, अन्य को नहीं (यजु०)।

करनी करे सो फल भरे, करके क्यों पछताय।
बोये पेड़ बबूल के तो, आम कहाँ से खाय॥

जो मलिन अन्त:करण वाले पुरुष हैं, उनके वेद, त्याग, यज्ञ, नियम तथा तप कभी सिद्धि को प्राप्त नहीं होते और अन्त:करण की शुद्धि में मुख्य साधन सत्य है। किसी विद्वान् ने ठीक कहा है-

अश्वमेध सहस्त्रं च सत्य च तुलया धृतक्।
अश्वमेध सहस्त्राद्धि सत्मेकं विशिष्यते॥

अर्थात् हजारों अश्वमेध यज्ञों के करने से जो फल मिलता है, सत्य का आचरण करने से उससे भी अधिक फल मिलता है। महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि जो सभा में अन्याय होते को देखकर मौन रहे अथवा सत्य न्याय के विरुद्ध बोले वह महापापी होता है।

'ओम् विश्वानिदेव' का प्रार्थना मन्त्र प्रतिदिन रटते रहो, कोई लाभ नहीं है, जैसे गुड़-गुड़ कहने से जीभ मीठी नहीं होती जब तक गुड़ को जीभ से न चखा जाये। ऐसे ही प्रार्थना करने का लाभ तब होगा जब मन्त्र के अनुसार कार्य करेंगे।

दीप जलता नहीं अगर उसमें तेल नहीं होता।
मन में यदि मैल हो तो प्रभु से मेल नहीं होता॥

पहले पुरुषार्थ करो फिर ईश्वर से सहायता मांगो। परन्तु मनुष्य को यह करना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्यों को जितना सामर्थ्य रखा है, उतना पुरुषार्थ अवश्य करे, उसके उपरान्त ईश्वर के सहाय की इच्छा करनी चाहिये। जैसे कोई मनुष्य आँख वाले की ही किसी वस्तु को दिखला सकता है, अन्धे को नहीं। इसी रीति से जो मनुष्य सत्यभाव पुरुषार्थ से धर्म को किया चाहता है उस पर ईश्वर भी कृपा करता है, अन्य पर नहीं। क्योंकि ईश्वर ने धर्म करने के लिये बुद्धि आदि बढ़ाने के साधन जीव के साथ रखे हैं। जब जीव उनसे पुरुषार्थ करता है, तब परमेश्वर भी अपने सब सामर्थ्य से उस पर कृपा करता है, अन्य पर नहीं।

भगवान् श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं-(नहीं ज्ञानेन सदृश पवित्रं इह विद्यते) अर्थात् ज्ञान के समान पवित्र करने वाली कोई वस्तु संसार में नहीं है। गीता संसार में कमलवत् रहना सिखाती है। दुनिया में रहो, मगर उसमें फंसो नहीं। संसार को भोगो, मगर उसमें डुबो नहीं। बाजार से गुजरो, मगर बाजार की चीजों के आकर्षण में पागल मत बन जाओ। संसार में भोग पदार्थों की सीमा हम चाहे जितना भी भोजन, वस्त्र, मकान, धन-दौलत, भोगपदार्थ एकत्र कर लें भोग तो उतना ही कर सकोगे, जितनी शरीर की सामर्थ्य और सीमा है। बाकी तो आडम्बर, प्रदर्शन और अहंकार के लिये है।

अहंकार में तीनों गये, धन वैभव व वंश।
न मानो तो देख लो, रावण, कौरव, कंश॥

दूसरों को प्रसन्न करने के लिए काम करने वाला सिद्धान्तहीन होता है। ऐसे व्यक्ति का कोई भरोसा नहीं कि वह कब क्या कर बैठे। ऐसे व्यक्ति ने अपने लोक और परलोक दोनों बिगाड़ लिये हैं।

इस संसार में जब तक मनुष्य का शरीर नीरोग और स्वस्थ रहता है, तब तक मृत्यु समीप नहीं आती, तब तक मनुष्य को आत्मकल्याण अथवा मोक्षप्राप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए। उसे दान, तीर्थ सेवन, सत्संग, व्रत, पूजा आदि शुभकर्म कर लेने चाहियें, क्योंकि जब तक जीवन है

और शरीर स्वस्थ है, तब तक ही मनुष्य कुछ करने में समर्थ हो सकता है। शरीर व्याधिग्रस्त हो जाने पर अथवा मृत्यु के निकट आने पर मनुष्य के लिए कुछ भी करना संभव नहीं होगा। विचारणीय यह है कि रोग, बुढ़ापा और मृत्यु का कोई समय निश्चित नहीं, अतः जितना शीघ्र हो सके व्यक्ति को शुभकर्मों में लग जाना चाहिए (आचार्य चाणक्य)। आचार्य का कहना है कि समय गुजरता रहता है और न जाने कब व्यक्ति को रोग धर ले और कब मृत्यु का संदेश ले यमराज के दूत द्वार पर आ खड़े हों, इसलिए मानव को चाहिए कि वह जीवन में अधिक से अधिक पुण्य कर्म करे। जिस प्रकार फूल में गन्ध, तिलों में तेल, लकड़ी में आग, दूध में घी, गन्ने में मिठास आदि दिखाई न देने पर भी विद्यमान हैं। उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में दिखाई न देने वाली आत्मा का निवास है। यह रहस्य ऐसा है कि इसे विवेक से ही समझा जा सकता है।

मनुष्य को चाहिए कि वह इस रहस्य को समझने का प्रयास करे कि वह शरीर न होकर आत्मा है। आत्मारूपी तत्त्व इस देह में उसी प्रकार विद्यमान है जिस प्रकार फूलों में गन्ध, तिलों में तेल और लकड़ी में अग्नि तथा गन्ने में मिठास और दूध में घी विद्यमान होने पर भी दिखाई नहीं देते।

पवित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥ (गीता)

अर्थात् ईश्वर हर युग में धर्मात्माओं की रक्षा और दुष्टों का नाश तथा धर्म की स्थापना के लिए सम्भव उपाय करता रहता है।

पश्चात्ताप को भी इसी प्रकार अघमर्षण का उपाय नहीं कहा जा सकता पाप करने के पश्चात् ही आदमी प्रायश्चित्त करता है। अघमर्षण का अर्थ यह नहीं है कि पाप कर्म तो करूँ किन्तु उसका फल मुझे न मिले। फल तो कर्म से बंधा हुआ होता है। पाप किया है तो उसका फल भी अवश्य मिलेगा ही। अघमर्षण फल की बात नहीं करता, वह तो पापकर्म को ही समाप्त करने की बात करता है। अतः अघमर्षण और प्रायश्चित्त में बहुत बड़ा अन्तर है।

पाप से बचने के तीन उपाय हैं-(1) ज्ञान, (2) यश और सुख की कामना, (3) ईश्वर का भय। पाप का सबसे बड़ा हेतु है-अज्ञान। छोटे-बड़े सभी पापकर्म आदमी अज्ञान में करता है। अतः पाप से बचने का उपाय है-ज्ञान की प्राप्ति। वेद कहता है-'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति' अर्थात् ज्ञान के बिना आदमी पापमुक्त नहीं हो सकता। जिन्हें जगन्नियन्ता और उसकी करण-व्यवस्था, जीवात्मा और उसके यथार्थ स्वरूप का बोध हो गया वे पापाचरण नहीं करते। इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए नित्यप्रति सन्ध्या-स्वाध्याय और योगाभ्यास का विधान ऋषियों ने किया है। जो व्यक्ति नित्य सन्ध्या, स्वाध्याय, धर्मात्माओं का संग और योगांगों का अनुष्ठान करते हैं वे यथार्थ ज्ञान को प्राप्त होकर पाप कर्मों से सर्वथा पृथक् हो जाते हैं।

मनुष्य शरीर को प्राप्त करके मनुष्य मनुष्य बने इसका क्या उपाय हो सकता है। मनुष्य का निर्माण किस प्रकार किया जाये जिससे मनुष्य को मनुष्य से भय न हो। आज मनुष्य को शेर-चीते आदि हिंसक पशुओं से इतना भय नहीं है, जितना भय मनुष्य से है। इस भय को जड़-मूल से उखाड़ फेंकने के लिये ऋषि दयानन्द ने 'संस्कारविधि' नामक ग्रन्थ की रचना की जिससे मनुष्य का निर्माण या उसकी शिक्षा तीन या पांच वर्ष में नहीं अपितु जन्म से पहले से ही प्रारम्भ हो जाती है। मानव निर्माण की 16 सीढ़ियां हैं जिन्हें 16 संस्कार कहते हैं। संस्कारों के माध्यम से श्रेष्ठ मानव बनाने का विवेचन आपने अपने अद्भुत ग्रन्थ 'संस्कारविधि' में किया है।

मानव निर्माण का आधार वेद है, वेद ईश्वरीय ज्ञान है। परमात्मा ने सृष्टि की रचना करके इस सृष्टि में हम किस प्रकार सुखपूर्वक रह सकते हैं, इसका उपदेश वेद में दिया है। इसलिए वेदों में उपदेश है कि 'मनुर्भव जनया०' अर्थात् हे मनुष्य! तू श्रेष्ठ मानव बन तथा श्रेष्ठ संतान को जन्म दे। वेदों में हमारे जीवन की समस्त सुख-सुविधा और आवश्यकताओं का उपदेश है। इसलिए महर्षि ने लिखा है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। यह ज्ञान कराने हेतु ऋषि ने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' लिखा है। ऋषि के तीन ग्रन्थ (सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका) बृहत् त्रयी के नाम से प्रसिद्ध हैं, जिसमें मानवता की समस्त रूपरेखा विद्यमान है। मानव निर्माण का श्रेष्ठ कार्य सदा चलता रहेगा। इसलिये ऋषि दयानन्द ने 1875 ई० में आर्यसमाज की स्थापना की।

क्रमशः पृष्ठ 16 पर......

कर्मफल व्यवस्था में कुछ मान्य भ्रान्तियों का शंका-समाधान

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

18वीं शताब्दी में प्राचीन वैदिक ऋषियों की श्रेणी में हम एकमात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती को पाते हैं, क्योंकि महर्षि दयानन्द जी से संसार को ईश्वरीय ऋत सत्य ज्ञान व विज्ञान से जोड़ने का मार्ग दिखाया। उन्होंने वेदों के रूढ़ि अर्थों पर प्रहार करके इतिहास परक अर्थों से छुड़ाकर ईश्वर परक अर्थ बताए और वेदों के ईश्वर परक अर्थों से समाज में व्याप्त तमाम धार्मिक अन्धविश्वास सामजिक, राजनैतिक, साम्प्रदायक मान्यताओं का उन्मूलन किया।

यह भी सत्य है कि सदियों से तमाम अन्धविश्वासों की गहरी जड़ें मानवों के संस्कारों में जम चुकी हैं। इनको निकालना इतना आसान नहीं है, किन्तु मुश्किल भी नहीं है। आज के युग में बड़ा से बड़ा राष्ट्र नेतृत्व वाला तथा धर्मगुरु या समाज-सुधारक सत्य आध्यात्म ज्ञान के अभाव में भटक रहे हैं और जब उच्च नेतृत्व ही अविज्ञान पथ पर चले तो जन साधारण की बात ही क्या कहें। आइए कुछ भ्रान्त मान्यताओं पर विचार करते हैं।

शंका समाधान संक्षिप्त में

प्रश्न-क्या हमें जो सुख-दुःख प्राप्त होते हैं, यह पूर्ण जन्म के या इस जन्म के कर्मों के फल हैं?

उत्तर-मनुष्य को जन्म से मिश्रित फल प्राप्त होते हैं किन्तु वर्तमान कर्मों के फल हमें सुख-दुःख रूप में इसी जन्म में मिलते हैं। तीनों प्रकार के सभी आध्यात्मिक, आदिवैदिक तथा आधिभौतिक सुखों और दुःखों का पूर्वजन्मों के कर्मों के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है, किन्तु पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर कुछ गरीब के यहां जन्म लेते हैं, कुछ धनाढ्य परिवारों में जन्म लेते हैं। यह सुविधा और असुविधा मिलना पूर्वजन्मों के फल हैं। विचारणीय है कि जीव के जन्म से पहले माता, पिता के पास उपलब्ध मार्गों व ज्ञान आदि के स्तर को ही उस जन्म लेने वाले जीव के पूर्व कर्मों से सम्बन्ध किया जा सकता है।

प्रश्न-क्या यह मान्यता ठीक है कि भाग्य को बदला जा सकता है या हर कोई किस्मत का खाता है?

उत्तर-इस प्रश्न पर अभी यह कहना है कि हम भाग्यवादी नहीं कर्मवादी बने। जीवन में कर्म प्रधान है और अच्छे व बुरे कर्मफल को हम भाग्य का फल अज्ञानता से कहते हैं।

जब भाग्य पूर्व निश्चित ही नहीं, अर्थात् इस जन्म में मिलने वाले सभी सुख व दुःख जब पूर्व जन्मों के आधार पर निश्चित नहीं तो पुरषार्थ करके सदाचार द्वारा अपने सुखों को बढ़ाया तथा दुराचार द्वारा अपने दुखों को बढ़ाया जा सकता है। वेदों की शिक्षा में पुरुषार्थ पर ही बल दिया गया है। कहा भी है मेरे दायें हाथ में पुरुषार्थ है और बांयें हाथ में भाग्य है। केवल भाग्य के सहारे बैठने वाले व्यक्ति कभी सफल नहीं होते हैं।

प्रश्न-समाज में भ्रूणहत्या करना क्या जन्म लेने वाले जीव के कर्मों का फल है?

उत्तर-जन्म लेने वाले जीव का कर्मफल नहीं है, क्योंकि भ्रूणहत्या माता-पिता के सहमति से उनकी स्वतन्त्रता के कारण हुई है, इसमें ईश्वर का कोई हस्ताक्षेप नहीं है इस प्रकार दुःख को आधिभौतिक दुःख कहा जा सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भ्रूणहत्या को ब्रह्महत्या की संज्ञा दी है। अतः भ्रूणहत्या कराने वाला, करने वाला तथा सहमति देने वाला सभी इस अपराध के दोषी हैं।

प्रश्न-महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा मृत्यु पूर्व कहे शब्द, हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो का क्या अर्थ है?

उत्तर-महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वेदों के महाविद्वान् थे, वे जानते थे कि यह मुझे मारने का विरोधियों का षड्यन्त्र है और षड्यन्त्र करना उनका स्वतन्त्र कर्म करने का कारण है, अतः षड्यन्त्रकारियों ने अपने कर्म की स्वतन्त्रता के कारण स्वामी जी को उनके रसोइये के माध्यम से कालकूट विष दूध में पिलवा दिया था, महर्षि दयानन्द जी उसी विष से महाप्रयाण कर गये थे, महान् ईश्वर भक्त की अपने अन्तिम समय में परमात्मा के प्रति सच्ची श्रद्धा थी, जो इस प्रकार से व्यक्त हुई और स्वामी जी के अन्तिम शब्द भी विचारणीय है कि तेरी इन्छा पूर्ण हो, आहा ! बहुत प्रसन्नता पूर्वक यह शब्द कहे गये हैं कि हे भगवन् तेरे द्वारा जीवों के कल्याण की इच्छा है, वह पूर्ण हो, स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण के लिए लगा दिया था और इसी

कल्याण ईश्वरीय इच्छा के पूर्ण होने की प्रार्थना अन्तिम में कर गये थे।

प्रश्न-किसी दुर्घटना में कुछ व्यक्ति मर जाते हैं, कुछ बच जाते हैं, क्या बचने वालों की आयु शेष थी, इसीलिए बच गये?

उत्तर-दुर्घटना में मरने वालों की न तो आयु समाप्त हुई थी और न ही बचने वालों की आयु शेष थी, क्योंकि किसी की भी आयु पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर पूर्व निश्चित नहीं है, क्योंकि दुर्घटना में अलग-अलग व्यक्तियों की शारीरिक चोट लगने के कारण उनकी मृत्यु शारीरिक क्षमता पर निर्भर करती है। हर व्यक्ति पर लगने वाली चोट अलग-अलग होती है। इसमें किसी की किस्मत का निश्चित कोई हाथ नही होता है, इसलिए दुर्घटना किसी भी समय कहीं पर भी हो सकती है व व्यक्तियों की मृत्यु या चोट लगना दुर्घटना के प्रकार पर निर्भर करती है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि जिनकी मृत्यु हुई उनकी आयु समाप्त हो गयी थी और जो बच गये उनकी आयु शेष थी। ऐसा मानना मानसिक अन्धविश्वास है।

प्रश्न-क्या ज्योतिष ग्रन्थों में फलित भविष्यवाणियां की जाती है, वह झूठी होती हैं?

उत्तर-फलित ज्योतिष की भविष्यवाणियों व ग्रन्थ सभी कल्पना पर आधारित हैं, वे झूठे है तथा गणित ज्योतिष ग्रन्थ व उसकी भविष्यवाणियां ठीक हैं। गणित ज्योतिष में भूगोल में सूर्य, चन्द्र आदि की गति से सम्बन्धित ज्ञान विज्ञान है वह ही मात्र मानने योग्य है। शेष मानवों को भ्रमित करने वाला है।

प्रश्न-जो लोग वैदिक धर्म को नहीं मानते है और विभिन्न मतों में जाकर पूजा-पाठ करते हैं और सुख-शान्ति का अनुभव करते हैं, क्या वह सुख-शान्ति गलत है?

उत्तर-ईश्वरीय पूजा का सम्बन्ध आत्मा से है और आत्मा सत्य ज्ञान कर्म से ही सन्तुष्ट होती है जो ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म को छोड़कर अन्य मतों में रहकर अन्धपूजा करते हैं, वह उनके मन को तो वह सन्तुषटि दे सकता है, किन्तु सत्य विवेक और आत्मज्ञान नहीं दे सकते हैं। उनको अपने लक्ष्य में जो सफलता मिलती है, वह उनका पुरुषार्थ रहता है। सत्य ईश्वर की पूजा से केवल सत्य मार्ग मिलता है और कल्पित देवों की पूजा अर्चना से मनुष्य पाप, अत्याचार व अनैतिकता से नहीं बच सकता है।

प्रश्न-विभिन्न मतों के धर्माचार्य जो वेदों के प्रतिकूल असत्य धर्म का प्रचार कर रहे हैं, क्या यह गलत है?

उत्तर-महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें सम्मुलास में लिखते हैं कि जो विद्यादि सदगुणों में गुरुत्व नहीं है और ऐसा कहते और झूठ-झूठ कंठी तिलक वेद विरुद्ध मंत्रोपदेश करते हैं, वे गुरु ही नहीं, गडरिये जैसे हैं। जैसे गडरिये अपनी भेड़ बकरियों से दूध आदि का प्रयोजन सिद्ध करते हैं वैसे ही शिष्यों के चेले-चेलियों के धन हर के अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं।

प्राक्कथन-ध्यानाकर्षण

आज संसार में अधिकांश मानव जगत् कल्पित अन्धविश्वास व भ्रम व मतभेद में फंसे हुए हैं। उतना तो महाभारत काल से पूर्व में भी नही थे। वेद धर्म न मानने के कारण ही जन साधारण मूल सत्य सिधान्तों को नहीं समझ पाते हैं। इसके लिए सत्य कर्म मीमांसा को समझना अनिवार्य है। मनुष्य का स्वाभाविक लक्ष्य है, सत्यधर्म, सत्य ईश्वर को मानना, और ऋतसत्य की ओर समाज को राह दिखाना सबसे उत्तम पुण्य है और असत्य, ईश्वर के गुण कर्मानुसार और सुष्टि कर्म के विरुद्ध जनता को भ्रमित करना सबसे बडा पाप है। इस लेख मे हमने वर्तमान अन्ध कर्म मीमांसा का संकेत मात्र किया है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। समाज को सत्य मार्ग दिखाने की है।

श्रद्धेय पाठक जी आज विपरीत मान्यताओं के कारण ही मानव कर्म तथा कर्मफल के मूल सिधान्तों को समझ नहीं पाता है और उचित और अनुचित क्या है इसका निर्णय नहीं कर पाता और मनुष्य की सत्य पुरूषार्थी शक्ति, पुरुषार्थ से कमाया हुआ धन और अमूल्य जीवन के मूल्यवान क्षण और ईश्वरीय सिद्धान्त व सृष्टिक्रम व धर्म के विपरीत मान्यताओं के कारण यह जीवन और अगला जन्म दुःखदायी होता है।

सम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क-मो० 08901387993

योग

योग को सरल भाषा में समझाते हैं। योग पालथी मारकर बैठना, आंख बन्द कर वेदमाता के मन्त्र सन्ध्या उपासना करना। जब तक मन्त्र याद हो बोल-बोल कर करना। जब याद हो जाये तो मन ही मन में करना।

प्राय: गृहस्थ व्यक्ति योगाभ्यास से भय करते हैं, क्योंकि योग को स्वयं तो समझते नहीं हैं, औरों को दूसरों के द्वारा भ्रान्तियुक्त बातें बताई जाती हैं, कहते हैं योग बड़ा कठिन है यदि थोड़ी-सी भूल हो जावे तो बड़ा अनर्थ होता है। महिलाओं को तो योग करना ही नहीं चाहिए, न गृहस्थियों को योग करना चाहिए। इसके लिए तो घर-बार छोड़ना पड़ता है। ऐसी-ऐसी बातें सुनकर व्यक्ति योग में नहीं लगना चाहते।

ऐसे ही आर्यसमाज के विषय में महर्षि दयानन्द जी के बारे में अन्यों ने बड़ी भ्रान्ति बातें प्रचारित कर रखी हैं व आर्यसमाज के समीप नहीं आने देते। कहते हैं ये तो नास्तिक हैं, विधर्मी हैं, भ्रष्ट हैं, न राम को न हनुमान को न कृष्ण को मानते हैं। सामान्य व्यक्ति उनके बहकावे में आ जाते हैं।

एक उदाहरण है कि एक गृहस्थ व्यक्ति था उसका यह व्रत था कि पहले किसी साधु-संन्यासी, अतिथि आदि को भोजन कराकरउसके पश्चात् ही भोजन करना। एक बार ऐसा संयोग हुआ कि वर्षा के कारण दो दिन तक कोई अतिथि नहीं मिला। उनका एक 5-6 वर्ष का बालक भी था। वह तो भूख के कारण रोने लगा। तब उन्होंने एक उपाय सोचा कि चीनी के तीन साधु हलवाई से ले जाते हैं, उन्हीं को दिखाकर हम भोजन कर लेंगे। ऐसा सोचकर तीन चीनी के साधु लाया व घर में रख बाजार से और सामान लाने के लिए जाने लगा। तब सामने तीन साधु दिखे तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ चलो अब व्रत भंग नहीं होगा। उनके पास जाकर घर चलने के लिए प्रार्थना की और कहा कि आज का भोजन मेरे यहाँ ही होगा। वे भी बड़े प्रसन्न हुए कि आज बड़ा भाग्य है कि बिना मांगे ही आदर पूर्वक भोजन मिल रहा है उनको घर ले जाकर बैठा दिया और वह बाजार वापस और सामान लेने चला गया। घर में बच्चा भूखा था, वह चीनी के साधु को देखकर कहने लगा कि साधु खाऊँगा। तब माँ बोली-बेटा, ठहर जाओ पिताजी बाजार से आ जायेंगे तब तीनों मिलकर एक-एक साधु को खा लेंगे।

उन साधुओं ने जब यह सुना तो घबरा गये व बिना कहे वहाँ से उठकर चले गये। आगे गृहस्थी आता दिखाई दिया तब तो वे भागने लगे, गृहस्थी पीछे-पीछे दौड़ा और ठहरने के लिए आवाज लगाई पर वे न रुके तब किसी और व्यक्ति ने साधुओं को रोका और कहा आप रुक जाओ वह तो बड़ा सज्जन है, साधुओं का सत्कार करता है, बहुत समझाने पर वे रुके, तब गृहस्थी आया और कहा कि आप क्यों भाग रहे हो? मैं सब सामान लाया हूँ, चलिए घर चलें। तब साधुओं ने बताया कि आपका बच्चा भीतर कह रहा था कि माँ साधु खाऊँगा तब बालक को आपकी पत्नी कह रही थी कि ठहर जा पिताजी को आने दो फिर मिलकर एक-एक साधु खायेंगे। तब तो हम जान बचाकर भागे। अब गृहस्थी जोर से हँसा, उसने कहा कि घर में तीन चीनी के साधु रखे हैं, उनके विषय में कहा गया है, अब चलिए वापस भ्रम दूर हो गया।

इसी प्रकार योग, आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द के प्रति यथार्थ ज्ञान न होने से दूसरों के बहकावे में आ जाते हैं। योग तो औषधि है, सभी प्रकार के दु:खों के नाश करने वाली विद्या है, जो भी इसको समझकर उसका आचरण करेगा उसके सब दु:ख क्लेश हट जायेंगे व स्थिर सुख की प्राप्ति होगी। योग व्यावहारिक विषय है, प्रत्येक परिस्थिति में, प्रत्येक देश में, प्रत्येक काल में, सभी मनुष्य को अपनाने योग्य है, क्योंकि सभी तो दु:ख से छूटना व सुख को पाना चाहते हैं। महर्षि पतञ्जलि योगदर्शन के प्रथम समाधि पाद में ही योग क्या है, योगाचरण से क्या स्थिति होती है व उससे क्या लाभ है? अपना भला चाहने वाला अवश्य करेगा।

–कृष्णा देवी आर्या, प्रधान आर्य महिला मण्डल,
गांव बालन्द, जिला रोहतक

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

पंजाब में आर्यसमाज

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

गतांक से आगे....

तलवन ग्राम में जाने के बाद रात्रि विश्राम जालंधर आर्यसमाज में किया। सुबह अमृतसर, मजीठा के जलालपुर

गांव के लिए रवाना हुए। जलालपुर गांव के स्वनामधन्य स्वामी धर्मानन्द के बारे में 'जिज्ञासु' जी के साहित्य से पढ़ा था। इनको प्रौढ़ावस्था में सत्यार्थप्रकाश पढ़कर आर्यसमाज की धुन लगी। मत-पन्थ को छोड़कर ये आर्यसमाज के मिशनरी साधु बने। इनके जीवन की एक घटना के आसपास के क्षेत्र में इनके चरित्र की धाक जम गई थी, इसी घटना पर पण्डित चमूपति ने 'और रात काटी शीत में' हृदयस्पर्शी कविता लिखी थी। ये बड़े तपस्वी व कठोरता से अपरिग्रह नियम का पालन करने वाले साधु थे। गांव में जाकर देखा तो यह एक छोटा-सा गांव है। इस गांव में स्वामी जी को जानने वाला व आर्यसमाज का नामलेवा कोई नहीं मिला। बड़ी कठिनाई से लगभग एक घण्टे के प्रयास व लोगों से अनुनय-विनय करने पर प्रचार का स्थान मिला व 15-20 लोग एकत्रित हुए। स्वामी जी के विषय व आर्यसमाज पर प्रकाश डाला गया। एक ग्रामीण राजनेता भी प्रचार में आए। इस सिख बन्धु ने अपना नम्बर भी दिया। जब हमने इस घटना की श्रीयुत 'जिज्ञासु' जी को बताया तो उन्होंने कहा कि अमृतसर समाज वाले तो स्वामी धर्मानन्द का बहुत नाम लेते हैं। लेकिन विडम्बना यही कि गाँव में प्रचार करने कोई नहीं निकलता। हमारे पूर्वजों ने विपरीत परिस्थितियों से जूझकर गांव-गांव आर्यसमाज पहुँचाकर इसे एक जन आन्दोलन बना दिया था। लेकिन हमारी निष्क्रियता ने परिस्थितियों को और विकट व भयावह बना दिया है।

जब तक हम अपने तप से इन परिस्थितियों को अनुकूल नहीं बना देते तब तक शहीद लेखराम जैसे प्रचारकों का तप हमें धिक्कारता रहेगा। आश्चर्य उन मिशनरियों के प्रभाव से सुदूर गांव से व हर वर्ग से साधु-संन्यासी, प्रचारक निकलते थे।

हरयाणा की ओर लौटते हुए पंजाब में जब हाइवे से 'करतारपुर गुरुकुल' लिखा देखा तो लाखों, करोड़ों आर्यों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश करने वाले ऋषि दयानन्द के ज्ञान प्रकाशक गुरु विरजानन्द के प्रति श्रद्धा हमें गुरुकुल में खींच ले गई। वहाँ देखा तो आर्यवीर दल का शिविर चल रहा था। वहां के आचार्य उदयन युवा, गठीले शरीर के, सरल स्वभाव वाले विद्वान् हैं। परिचय के बाद उन्होंने बालकों में व्याख्यान का आदेश दिया। व्याख्यान हुआ व श्री तेजवीर (पानीपत) का भजन हुआ। आचार्य जी को प्रचार सरल व बालकों के अनुकूल लगा। उन्होंने दोपहर बाद 3 बजे फिर से व्याख्यान व भजन का आदेश दिया, जिसे टालना कदापि उचित नहीं था। जब बाद दोपहर हम गुरुकुल से चले तो आचार्य उदयन ने कहा कि अगली बार सूचना देकर आना तब मैं स्वयं व गुरुकुल के कुछ विद्यार्थी भी चलेंगे व घर-घर जाकर लोगों को प्रचार में आने का निवेदन करेंगे। यह आश्वासन उन्होंने तलवन गांव में आर्यसमाज की स्थिति को सुनकर विशेष रूप से दिया। एक-दो और स्थान पर प्रचार के लिए जाना चाहते थे, लेकिन अति आवश्यक कार्य से लौटना पड़ा, फिर कभी सही।

प्रत्येक आर्यसमाज से निवेदन है कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द का गांव-गांव प्रचार करने का संदेश याद रखें, उस संदेश को अपनाएं। यात्राओं को सैर-सपाटा, स्थल दर्शन तक सीमित न रखकर रास्ते में आने वाले गांव में प्रचार करें। आर्यसमाज की यात्रा ही प्रचार यात्रा होनी चाहिए। पंजाब से लौटकर हरयाणा के कुछ आर्य महापुरुषों के गांव में प्रचार किया। अगले अंक में उनके बारे में लिखूंगा।

पाठकगण! पन्द्रह वर्ष से ऊपर हुए आर्यसमाज का कार्य करते हुए। कभी अपवाद रूप में ही प्रचार का सूचीबद्ध वर्णन किया है। यहाँ यह वर्णन स्वयं के प्रचार का ढिंढोरा पीटने के लिए नहीं अपितु महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता व उस समय के प्रचारकों के तप के प्रभाव की झलक मात्र दिखाने के लिए किया जा रहा है। अन्यथा न लेवें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली

आर्य महासम्मेलन की तैयारियों से सम्बन्धित सब आर्यसमाजों/आर्यसंस्थाओं की सेवा में पत्र

माननीय महोदय,

सादर नमस्ते।

प्रभु कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आप सभी को अवगत है कि "**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**" के संयुक्त तत्त्वावधान में "**अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली**" का आयोजन दिल्ली में **दिनांक 25, 26, 27 एवं 28 अक्तूबर, 2018 तक** किया जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की परम्परा का आरम्भ वर्ष 1927 में दिल्ली से हुआ था। तब से आर्यों के विशाल संगठन के ये आयोजन देश-विदेश में होते रहे। वर्ष 2006 के दिल्ली महासम्मेलन में लिए गए संकल्प के आलोक में इन महासम्मेलनों की श्रृंखला विदेशों में पुन: आरम्भ हुई और तब से लेकर अब तक अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, हॉलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर-थाईलैण्ड, आस्ट्रेलिया, नेपाल और बर्मा में आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए हैं। अब यह महासम्मेलन पुन: दिल्ली में आयोजित हो रहा है। देश-विदेश में इसकी तैयारियाँ आरम्भ हो चुकी हैं। इस सम्बन्ध में आपसे निवेदन है कि-

प्रान्तीय सभा के कार्यालय को ही सम्मेलन का प्रान्तीय कार्यालय बनाया गया है।

अपनी आर्यसमाज के समस्त अधिकारियों, सदस्यों सहित अधिक से अधिक संख्या में पहुँचने के लिए आर्यजनों को प्रेरित करें। आपकी आर्यसमाज की ओर से कितने आर्यजन पहुंचेंगे इसकी सूचना यशाशीघ्र केन्द्रीय कार्यालय को भेजें तथा उसकी प्रति प्रान्तीय सभा को भी भेजें।

अपनी आर्यसमाज के बाहर तथा मुख्य मार्ग और चौराहों पर सम्मेलन के होर्डिंग बनवाकर लगवाएं तथा सम्मेलन के पत्रकों में अपनी आर्यसमाज के अधिकारियों के नाम प्रकाशित करके जन सामान्य को अधिकाधिक संख्या में आमन्त्रित करें। सीडी केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड नई दिल्ली दूरभाष-91-9540029044 से प्राप्त की जा सकती है।

अपनी आर्यसमाज/संस्था की ओर से तीन-चार दिन की अथवा साप्ताहिक रूप से प्रभातफेरी का आयोजन करें तथा अधिकाधिक युवा शक्ति को महासम्मेलन में सम्मिलित करने का प्रयास करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन तक अपनी संस्था की ओर से आयोजित होने वाले प्रत्येक उत्सव आदि के पत्रकों में महासम्मेलन की जानकारी अवश्य दें तथा सम्मेलन का 'Logo' भी अवश्य छापें। लोगों www.aryamahasammelan.org से डाउनलोड किया जा सकता है।

सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में विज्ञापन रूप में अपनी आर्यसमाज/संस्था की गतिविधियों का विवरण प्रकाशित कराएं, जिससे आर्यसमाज के इतिहास में आपकी संस्था का नाम अंकित हो। स्मारिका में विज्ञापन की सूची केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली से प्राप्त की जा सकती है।

आपकी आर्यसमाज/आपके क्षेत्र में 80 वर्ष से अधिक आयु के यदि कोई आर्य महानुभाव हों, जिन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार तथा विशेष कार्य को समर्पित किया हो तो उनका पूर्ण विवरण लिखकर केन्द्रीय आयोजन समिति को भेजे, जिससे उनके नाम को सम्मान समिति के विचारार्थ भेजा जा सके।

उपरोक्त के अतिरिक्त सम्मेलन को सफल, यादगार एवं और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके पास यदि कोई सुझाव हो तो उसे लिखकर केन्द्रीय आयोजन समिति को भेजें, जिससे आपके सुझावों/विचारों पर चर्चा की जा सके। सम्मेलन आयोजन समिति की ओर से दान एकत्र करने के लिए कूपन प्रकाशित किए गए हैं। राशि एकत्र करने हेतु आप प्रान्तीय कार्यालय से अथवा केन्द्रीय कार्यालय से कूपन मंगवाने तथा यथाशीघ्र एकत्र दानराशि भिजवाने की कृपा करें तथा अपनी आर्यसमाज की ओर से भी अधिकाधिक सहयोग राशि प्रदान करें। कृपया सहयोग राशि का चैक "**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018**" के नाम बनवाकर सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस महासम्मेलन आपका एवं आपकी आर्यसमाज/संस्था का सहयोग पहले से अधिक प्राप्त होगा और सम्मेलन को सफल बनाने में हम अपने प्रान्त की ओर से अधिकाधिक सहयोग कर सकेंगे।

धन्यवाद सहित।

मा० रामपाल आर्य, प्रधान   **उमेद शर्मा, मन्त्री**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

प्रभु तेरी प्रीति का...

प्रभु तेरी प्रीति का, प्यार है निराला।
हर पल पिया करूँ, तेरे प्यार का प्याला॥

पिया करो प्यार प्यारे, वो निराला कर देगा।
सबके दिल में बैठा दाता, वो उजाला कर देगा।
भूल का है लगा हुआ, सब के दिल में ताला।

न्याय से जो काम करे, वो इंसान होते हैं।
ज्ञान को बताने वाले, वो महान् होते हैं।
वेदों का जो ज्ञान देकर कर दे उजाला।

राम-कृष्ण पैदा हुए, जग में निराले थे।
पूजती है दुनिया सारी, प्रजा के रखवाले थे।
हनुमान सेवक मिल्या, राम को निराला।

पावन जीवन से ही, दाता जल्दी प्रसन्न होते हैं।
शुद्धि के हो जाने से ही, पल में दर्शन होते हैं।
प्रभु दर्शन करने वाला, आर्य मानव है निराला।

–रामकुमार आर्य, अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल (हिसार)
मो० नं० 9416030121

प्रेरक वचन

- समरसता के बिना कोई समाज सुखी नहीं रह सकता है।
- अतीत पर रोते हुए हम भविष्य को भी बर्बाद कर देते हैं।
- उपेक्षा के बाद मिली सफलता सबसे आनन्ददायक होती है।
- प्रत्येक शिखर की शुरुआत शून्य से ही होती है।
- आधुनिकता के मिश्रण से परंपराएं और बेहतर हो जाती हैं।
- जीवन में स्थायित्व के लिए स्वभाव में स्थिरता भी आवश्यक है।
- जीवन में समस्याएं नहीं हैं सिर्फ चुनौतियां हैं।
- ज्ञान पर दंभ करना अज्ञानता की सबसे बड़ी निशानी है।
- शक्ति के साथ उसके प्रयोग का विवेक भी उतना ही आवश्यक है।

–भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक)

बीरेन्द्र सिंह आर्य बने आर्यसमाज बाछौद के प्रधान

मंडी अटेली। सोमवार देर शाम आर्यसमाज बाछौद जिला महेन्द्रगढ़ की बैठक का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता उपप्रधान बीरेन्द्र सिंह आर्य ने की। वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक महात्मा विश्वमुनि के सान्निध्य में आयोजित चुनाव में 21 सदस्यीय कार्यकारिणी का गठन किया गया। कार्यक्रम में महात्मा विश्वमुनि एवं सुरेन्द्र को संरक्षक, बीरेन्द्र सिंह आर्य को सर्वसम्मति से प्रधान, मनीष कुमार और राजेन्द्र योगी को उपप्रधान, मनोज कुमार मंत्री, सुरेन्द्र कुमार उपमंत्री, जगदीश चौहान खजांची, कर्त्तव्य आर्य प्रचारमंत्री, सत्यनारायण आर्य पुस्तकाध्यक्ष, मास्टर अनिल व कीर्ति स्वरूप शर्मा को लेखा निरीक्षक, बिशनलाल व मिथुन आर्य को संयोजक, मधु शर्मा को महिलाध्यक्ष, मूर्ति यादव को सहायक, रामनिवास चौहान, ललित कुमार, विकास, मंजीत यादव, कृष्णकुमार व ललित यादव को कार्यकारिणी सदस्य चुना गया है। इस मौके पर प्रधान बीरेन्द्र सिंह आर्य ने बताया कि आगामी 13 जुलाई अमावस्या तिथि को उनके निवास पर सुबह 7 बजे यज्ञ का आयोजन किया गया तथा कार्यकारिणी सदस्यों को यज्ञोपवीत दिया गया। **–महात्मा विश्वमुनि, संरक्षक वेदप्रचारमण्डल, महेन्द्रगढ़ मो० 94168-85535**

वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी की पुण्यतिथि
एवं पूर्णिमा के अवसर पर
वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर रोहतक में

सामवेद पारायण महायज्ञ

मंगलवार 24 जुलाई, 2018 से शुक्रवार 27 जुलाई, 2018 तक

कार्यक्रम (यज्ञ-भजन-प्रवचन)

प्रात: 6.00 बजे से 9.00 बजे तक
सायं 3.30 बजे से 6.30 बजे तक

यज्ञ ब्रह्मा–**आचार्य अखिलेश्वर,** आनन्दधाम, हरिद्वार
वेदपाठ व भजन–**श्री सुशील शास्त्री एवं अविनाश शास्त्री** (गुरुकुल टंकारा)
प्रवचन–**आचार्य अखिलेश्वर, आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय**

आप सभी सपरिवार एवं मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

विशेष—आवास तथा भोजन की व्यवस्था आश्रम की ओर से नि:शुल्क होगी। यजमान बनने हेतु धोती/साड़ी साथ लाएं। समय परिवर्तन का अधिकार प्रधान/मन्त्री को होगा। पूर्णाहुति 27 जुलाई प्रात: 10.30 बजे होगी।

–वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री Mob. 9416211809

वृद्धा की इच्छा का सम्मान कर परिजनों ने किया देहदान

गुरुग्राम। गुरुग्राम में कई ऐसी शख्सियत हैं, जिन्हें मिसाल कहा जा सकता है। जिन्होंने जीवित रहने पर समाज के लिए काम किया और मरने के बाद भी समाज के लिए प्रेरणा दे गए। ऐसी हैं एक शख्सियत शिवाजी नगर निवासी 78 वर्षीया चंद्रकांता आर्या सोमवार को स्वर्गवास हो गया। स्वर्गीय चंद्रकांता आर्या ने अपने जीवन काल में ही अपने नेत्रदान का संकल्प लिया था। उनके पति नेभराज आर्य और पुत्रों हरीश कुमार एवं बलदेव आर्य ने उनके संकल्प का सम्मान करते हुए उनका कॉर्निया निरामया आई बैंक की मेडिकल टीम को सूचना देकर सौंप दिया। इसके बाद शिवाजी नगर स्थित आर्यसमाज मन्दिर तक उनकी शवयात्रा निकाली गई। वहां वैदिक मन्त्रोच्चार के बाद अंतिम संस्कार की क्रियाएं सम्पन्न की मगर देह का अग्निदाह नहीं किया बल्कि दिल्ली कैंट स्थित आर्मी मेडिकल कॉलेज में छात्रों के अध्ययन के लिए भेज दिया गया। उनकी शवयात्रा में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए।

स्व० चंद्रकांता आर्या समाजसेवी थीं। उन्होंने लोगों के घरों में जाकर नेत्रदान को लेकर जागरूकता की थी। जिनके घर मृत्यु हो जाती थी। वहाँ जाकर नेत्रदान कराती रही थी। इसलिए आई बैंक और नेत्रदान से जुड़े संगठनों ने उन्हें दृष्टिदूत की उपाधि दी थी। इस साल फरवरी के महीने में आर्यसमाजी व्यवसायी कन्हैयालाल आर्य की माता यमुना देवी का निधन हुआ था। उन्होंने भी देहदान किया था इसलिए दधीचि देहदान समिति के सौजन्य से उनकी देहदान की गई थी। स्वर्गीय चन्द्रकांता आर्या श्री कन्हैयालाल आर्य की पड़ोसी थी, उन्होंने इस घटना से प्रेरणा लेकर देहदान का संकल्प लिया था। दधीचि देहदान समिति ने स्वर्गीय चन्द्रकांता आर्या का भी देहदान कराया। उनके पुत्र और पौत्र शहर के व्यवसायी परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। लोगों ने उनके निधन पर शोक जताया है।

शानदार परीक्षा परिणाम (2018)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व भजनोपदेशक पं० रामेश्वरदत्त आर्य के सुपुत्र श्री सुनीलदत्त आर्य की सुपुत्री ज्योति आर्या ने आर्य गीता विद्या मन्दिर उचाना जिला जीन्द से दसवीं कक्षा में 94.2 प्रतिशत अंक लेकर विद्यालय तथा गाँव का नाम रोशन किया है। ज्योति ने इस स्कूल में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

इस शानदार सफलता पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा बेटी ज्योति को शुभकामनाएं देती है और भविष्य में इसी प्रकार से परिश्रम करके आगे बढ़ने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

इस उन्नति के जमाने सभी..... पृष्ठ 9 का शेष.....

किसी समाज के संगठन के लिए निश्चित सिद्धान्तों की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हिन्दूजाति के वर्तमान असंगठन का बहुत बड़ा कारण यह है कि इसके सिद्धान्त निश्चित नहीं रहे। जो आया उसने मनमानी की और जाति के टुकड़े-टुकड़े हो गए। महर्षि दयानन्द ने इसी रोग का निराकरण किया और समस्त हिन्दू जाति को एक सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया। जब तक आर्यसमाज ऋषि के बताये हुए नियमों पर कटिबद्ध रहेगा उसकी उन्नति ही होती जाएगी। परन्तु जिस प्रकार ऋषि दयानन्द ने चिरस्थायी लाभ के लिए क्षणिक लाभों की परवाह नहीं की, इसी प्रकार आर्यसमाज को भी दृढ़ रहना चाहिए तभी आर्यसमाज हिन्दू जाति को बरबाद होने से बचा सकेगा।

वीर चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कालका जिला पंचकूला में दिनांक 27.06.2018 से 30.06.2018 तक वीर चरित्र निर्माण का आयोजन पतंजलि योग प्रशिक्षक श्री खेमचन्द आर्य जी द्वारा किया गया जिसमें कक्षा दसवीं व बारहवीं के विद्यार्थियों ने भाग लिया एवं सभी अध्यापिकाओं ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। दिनांक 30.06.2018 को आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता आचार्य सर्वमित्र आर्य जी एवं उनके सहयोगी स्वामी ऋषिपाल जी बतौर मुख्यातिथि उपस्थित हुए। कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर ढंग से सम्पन्न किया गया।

मासिक सत्संग में मुख्यवक्ता बहन अंजली अपने विचार रखते हुए।

मासिक सत्संग में उपस्थित आर्यजन।

मासिक सत्संग में मंच पर उपस्थित सभा प्रधान, मुख्यवक्ता बहन अंजली आर्या व अन्य।

मासिक सत्संग में यज्ञमान को सम्मानित करते हुए प्रस्तोता आचार्य सर्वमित्र आर्य, सुभाष सांगवान, रोशन लाल आर्य व अन्य।

रोहतक के विद्यालय में वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

रोहतक के विद्यालय में वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

रोहतक के विद्यालय में वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

रोहतक के विद्यालय में वेद प्रचार अभियान की झलकियां।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (दिल्ली) मारीशस से पहुंचेंगे भारी संख्या में आर्यजन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली की तैयारी के चलते मारीशस पहुंचे हरियाणा सभा (प्रधान) मास्टर रामपाल जी एवं दिल्ली सभा (प्रधान) श्री धर्मपाल आर्य जी को मारीशस के वासियों में महासम्मेलन के प्रति अनूठा उत्साह देखने को मिला. विभिन्न आर्य समाजों और आर्य संस्थाओं में बैठक कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमें भारी में लोगों की उपस्थिति रही तथा महासम्मेलन में आने का संकल्प लिया ....

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ......

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा